शिक्षकों को आपस में अकादमिक चर्चाओं में सहयोग हेतु

चर्चा पत्र

माह, मार्च २०२५ नवम वर्ष अंक- 10

पेपर, ब्रश मिट्टी बांस, इस गर्मी करेंगे खास।

राज्य परियोजना कार्यालय समग्र शिक्षा, छत्तीसगढ़

पेपर ब्रश मिट्टी बांस, इस गर्मी करेंगे खास।

चर्चा पत्र अपने सफर के नवमें वर्ष में आखरी पायदान पर है। सत्र के अंतिम माह के इस अंक को हम विशेष अंक के रूप में आपको प्रेषित कर रहे हैं। मार्च माह के चर्चा पत्र में ऐसे शिक्षकों के कार्यों को स्थान दे रहे है जो बच्चों के पढ़ाई लिखाई के साथ साथ उन्हें भविष्य के लिए तैयार करने में अपनी महती भूमिका निभा रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी बच्चों को पढ़ाई के साथ जीवनोपयोगी कौशल सिखाने की बात कही गई है। इसी बात को ध्यान में रख कर हमारे शिक्षक बच्चों को अवकाश के दिनों में अलग अलग हुनर सिखाते है। इस वर्ष भी इन्होंने ग्रीष्मकालीन अवकाश में बच्चों को कुछ अलग हट कर कौशल सिखाने का संकल्प लिया है।

एजेंडा ।- गायन वादन नृत्य प्रशिक्षण

श्रीमती सावित्री सोनकर 9131274721 सहायक शिक्षक शासकीय प्राथमिक विद्यालय जरौद, विकासखण्ड आरंग, जिला रायपुर ।

गीत और संगीत एक औषधि है। हमारे जीवन के लिए, दुनिया का कोई भी व्यक्ति ऐसा नही है जिन्होंने गीत संगीत न सुना हो। नृत्य, गीत व संगीत ही हमारे मन को संतुलित व समन्वित करती है। संगीत हमारे जीवन का हिस्सा है। जब भी हमारा मन किसी काम में नही लगता उस समय कोई कर्ण प्रिय संगीत हमें सु नाई देता है तो हमारा मन भी प्रफुल्लित हो उठता है। इस गुढ़ रहस्य को समझ कर शिक्षिका श्रीमती सावित्री सोनकर अपने विद्यालय में बच्चों को संगीत की शिक्षा देती है। वह स्वयं गायन व नृत्य करती है वाद्य यंत्र बजाती है। बचपन में अपने सीखे हुए इ सी हुनर को अब वे अपने स्कूल के बच्चों में रोपित कर रही है। इनके विद्यालय के बच्चे भी ग्रीष्म कालीन अवकाश में शिक्षिका का साथ देते हुए संगीत कला सीखने में आतुर रहते है। शिक्षिका ने इस वर्ष ग्रीष्मकालीन अवकाश में छत्तीसगढ़ की प्राचीन लोक गीत, लोक नृत्य व वाद्य यंत्र को सिखाने की योजना बनाई है। जिससे हमारी विलुप्त होती संस्कृति को संरक्षित करते हुए बच्चों को संगीत की बारीकियां सीखा कर भविष्य के लिए तैयार किया जा सके।

एजेंडा 2- लोकल आर्ट पेंटिंग सिखाना

श्रीमती वसुंधरा कुर्रे 9977184904 सहायक शिक्षक शासकीय प्राथमिक विद्यालय सराई सिंगार, जिला कोरबा ।

वर्तमान परिवेश में पढ़ लिख कर परीक्षा पास करना या डिग्रियां हासिल कर लेने को शिक्षा का उद्देश्य मान लेना व्यर्थ है। सही मायने में सीखी हुई जानकारी को अपने व्यावहारिक जीवन में उपयोग करना एवं अगली पीढ़ी को हस्तांतरित करना या सिखाना ही शिक्षा का उद्देश्य है। शिक्षिका प्रति वर्ष ग्रीष्म कालीन अवकाश में बच्चों को सिखाने के लिए स्वयं कुछ नया सीखती है। अपने द्वारा सीखी हुई हुनर को बच्चों को सिखाती है। इस ग्रीष्मकालीन अवकाश में इन्होंने ने बच्चों को लोकल आर्ट, बस्तर आर्ट, वर्ली पेंटिंग सिखाने का लक्ष्य रखा है। शिक्षिका का मानना है कि सीखने की कोई उम्र नही होती कभी भी कही भी हम कुछ नया सीख सकते है। शिक्षिका ने पेंटिंग की कोई क्लास या डिग्री नही ली है बल्कि समाचार पत्रों, पत्र पत्रिकाओं, पोस्टर, होल्डिंग, पार्क, कपड़े व सामग्रियों में छपे प्रिंट को देख कर उसका फोटो खींच लेती है, अभ्यास करके उसे बनाती है। इसके अलावा यूट्यूब से देख कर अलग अलग पेंटिंग कार्य सीखती है। शिक्षिका की रुचि कुछ इसी तरह से नया करने व सीखने में है। अपने इसी रुचि को बनाये रखने एवं बच्चों को कौशल सिखाने के लिए नित नये प्रयास करती है। इस तरह से इनके द्वारा ग्रीष्मकालीन अवकाश में लोकल आर्ट, बस्तर आर्ट वर्ली पेंटिंग सीखकर विलुप्त होती हमारी चित्रकला को संरक्षित रखने का प्रयास किया जाएगा।

एजेंडा 03- रील बनाना

श्री रामेश्वर प्रसाद भगत 7000189154 सहायक शिक्षक शासकीय प्राथमिक शाला जिटियापारा, जिला जशपुर ।

कहते है आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है। मनुष्य जब भी किसी समस्या में पड़ा है तो उसके समाधान के लिए प्रयास करता है। मनुष्य ने अपनी बुद्धि का उपयोग करते हुए आवश्यक्तानुशार सामग्री निर्माण कर समस्या का समाधान पाया है। ऐसे ही कोरोना काल में जब काम करने के सब रास्ते बंद हो गए थे। तो हमने महसूस किया कि घर बैठे हम अपना पूरा काम कर सके। ऐसे समय में इंटरनेट व मोबाइल ने ही हमारा स्थान ले लिया। मोबाइल की सहायता से दूर बैठे हम अपने काम को आसानी से कर लेते थे। वर्तमान समय में मोबाइल की उपयोगिता और अधिक बढ़ गई है। इंटरनेट व मोबाइल की उपयोगिता को देख कर शिक्षक ने इस वर्ष ग्रीष्मकालीन अवकाश में अपने बच्चों को छोटे छोटे वीडियो रील बनाना एवं उसके सकारात्मक उपयोग करना सिखाने का निर्णय किया है। इसके लिये शिक्षक अपने विद्यालय में स्वयं से एक कम्प्यूटर व लैपटॉप उपलब्ध कराया है। बच्चों को इंटरनेट की सहायता से कम्प्यूटर की बेसिक जानकारी देंगे। छोटे छोटे वीडियो, रील बनाने एडिट करने का अभ्यास कराएंगे। बच्चों को पाठ की विषय वस्तु को सर्च व डाउनलोड करने सिखाएंगे। उन्हें स्वयं जानकारी सर्च करके पढ़ने व सीखने का अवसर देंगे। बच्चों को सही तरीके से इंटरनेट व मोबाइल का उपयोग करना सिखाकर उन्हें डिजिटल साक्षर बनाने का प्रयास करेंगे।

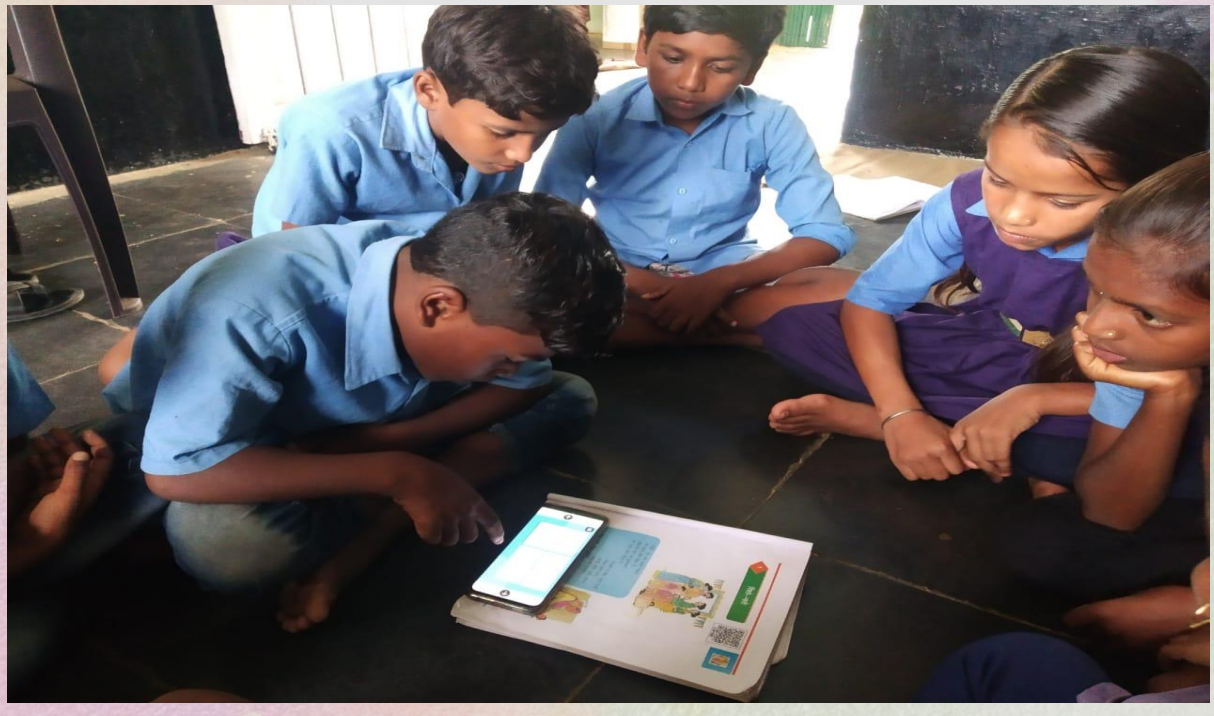

एजेंडा 04- प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी

श्रीमती गौरी भूमे 8966865908 व्याख्याता शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बरपाली, चांपा, जिला जांजगीर ।

"परीक्षा जीवन का एक हिस्सा है। सफलता एक किस्सा है।"

आपने अपने विद्यार्थी या शिक्षकीय जीवन में अनुभव किया होगा। बच्चों में प्रतिभाएं खूब होती है। उनके पढ़ने सीखने की ललक का स्तर बहुत ऊपर होता है। शिक्षक की कल्पनाओं से परे वे उत्तरोत्तर प्रगति करते जाते है। बच्चे अपनी प्राथमिक कक्षाओं की पढ़ाई को पूरा कर एक के बाद एक माध्यमिक स्तर की शिक्षा को भी पूरा कर लेते है। स्कूली शिक्षा को पूर्ण करने के बाद आगे क्या करना है ? वे समझ नही पाते है। जिसका परिणाम होता, उच्च शिक्षा में दाखिला कम होना। सही मार्गदर्शन के अभाव में बच्चों की प्रतिभाएं दब जाती है वे सही निर्णय नही ले पाते है। जिसका परिणाम व्यक्ति के साथ परिवार व समाज को झेलना पड़ता है। शिक्षिका का मानना है परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत है तो बच्चों को बारहवीं की परीक्षा के बाद विभिन्न रोजगार परख पाठ्यक्रम में प्रवेश लेना चाहिए इसके लिए प्रवेश परीक्षायें आयोजित होती है। जिसमें शामिल हो कर अपनी उच्च शिक्षा को पूर्ण कर सकते हैं। इसके अलावा यदि परिस्थिति अनुकूल नही है तो दसवीं व बारहवीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद रोजगार के बहुत से अवसर होते है। जिसके लिए आयोजित होने वाली विभिन्न परीक्षाओं में सम्मिलित होकर बच्चे सीधे रोजगार से जुड़ सकते है। कुछ बच्चे अपने परिवेश से जानकारी लेकर प्रयास तो करते हैं। प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी के दौरान उत्तर अंकित करने, विषय के चयन की यही जानकारी साक्षात्कार की तकनीकी अभाव व सही मार्गदर्शन की कमी के कारण उन्हें पूरी सफलता नही मिल पाती है। इसी बात को ध्यान में रख कर शिक्षिका ने इस वर्ष ग्रीष्मकालीन अवकाश में बच्चों को प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी के लिए कैरियर मार्गदर्शन करने का संकल्प लिया है। शिक्षिका की सकारात्मक सोच निश्चित ही हम सब के लिए प्रेरणादायक या प्रेरणादायी कार्य है।

एजेंडा 05- संस्कृति का संरक्षण

श्री कपिल साहू 9406120156 शिक्षक शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय कलगांव, विकासखण्ड अंतागढ़, जिला कांकेर।

व्यक्ति के व्यवहार का निर्धारण बहुत हद तक उसका परिवेश करता है। जिस परिवेश में व्यक्ति रहता है वैसे ही वह व्यवहार करता है। यही कारण है कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से व्यावहारिक रूप से भिन्न होते हैं। परिवेश समाज की संस्कृति पर निर्भर रहती है। सामाजिक जीवन में मौजूद हमारे स्थानीय भाषा, रीति रिवाज रहन सहन, खान पान, लोक संस्कृति गीत संगीत व आचार व्यवहार हमारे वातावरण का एक हिस्सा है। समय के साथ बदलते परिवेश ने हमारे संस्कृति को चोटिल किया है। हम अपने विशाल समृद्ध संस्कृति को आधुनिकता की होड़ में छोड़ते चले जा रहे। यही हाल रहा तो वह दिन दूर नही जब हमारी अपनी भाषा, मान्यताएं, रीति-रिवाज व खान पान अतीत की बात रह जायेगी। इस बात को शिक्षक ने अनुभव किया कि प्राकृतिक, सांस्कृतिक व सामाजिक वातावरण में बहुत तेजी से बदलाव होने से बच्चों के व्यवहार में परिवर्तन हो रहा है। वे अपनी संस्कृति को भूल कर पश्चिमी सभ्यता को अपना रहे है। विद्यालय एक ऐसा स्थान है जहाँ पर हम बच्चों को पर्यावरण संरक्षण के साथ साथ प्राचीन धरोहर की

जानकारी देकर उसे अपनाने व संरक्षित रखने का एहसास करा सकते हैं। इस हेतु शिक्षक ने इस वर्ष ग्रीष्मकालीन अवकाश के लिए कार्ययोजना तैयार किया है जिसमें स्थानीय भाषा, उत्सव, त्योहार, रीति रिवाज, खान पान व प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग की जानकारी देंगे एवं संस्कृति व सभ्यता के संरक्षण हेतु कार्य करेंगे।

एजेंडा 06- साहित्य लेखन

श्री अशोक कुमार पटेल 9827874578 व्याख्याता शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बलौदी, विकासखण्ड मगरलोड, जिला धमतरी।

कोरे कागज के टुकड़े, कॉपी के पन्ने या किसी डायरी पर कुछ लिख देना या उकेर देना को लेखन मान लेना एक भ्रम है। लेखन कला प्रत्येक व्यक्ति की एक विशेष कला, साधना, समर्पण व जुनून है। लेखन बुद्धि, कागज व कलम का समन्वय है। संसार में मानव के प्रादुर्भाव के साथ उसके चिंतन ने लेखन की आवश्यकता को जन्म दिया है। वर्तमान में इसे एक कौशल की संज्ञा दें तो कोई अतिश्योक्ति नही होगी। एक कलमकार अपनी कलम से कुछ सृजन करता है तो उसे ही नही मालूम रहता है कि जो वह लिख रहा है उनकी रचनाओं में कितनी ताकत है ? कलमकार के कलम में इतनी शक्ति होती है कि वे पहाड़ को राई व राई को पहाड़ बना देता है। एक लेखक या कवि द्वारा लिखी गई रचना समाज का प्रतिबिंब होता है। जो नव निर्माण के लिए दर्पण का काम करती हैं। टी.वी. व मोबाइल के प्रभाव से किताब पढ़ने व लिखने के प्रति लोगों का रुझान कम हुआ है। शिक्षक एक लेखक है। बचपन से ही उन्हें साहित्य के प्रति बहुत रुचि रही है। अपनी मातृ भाषा हिंदी के अलावा स्थानीय भाषा में कविता, कहानी, चुटकुले, पहेली व लेख लिखते हैं। विद्यालय के बच्चों को भी लिखने के लिये प्रेरित करते है। विद्यालयीन समय में पाठ्यक्रम को पूरा कराने की जद्दोजहद के कारण साहित्यिक गतिविधि या लेखन के लिए समय कम पड़ जाता है। इसी बात को ध्यान में रख कर शिक्षक ने इस वर्ष ग्रीष्मकालीन अवकाश में

बच्चों को साहित्य के प्रति जागरूक करने व लेखन की बारीकियों को सिखाने का निर्णय किया है। जिससे बच्चों में लेखन कौशल विकसित हो सकें और वे भी एक अच्छे साहित्यकार बन सकें।

एजेंडा 07- खिलौना निर्माण

श्रीमती दीपिका साहू 7587378427 प्रधान पाठक शासकीय प्राथमिक शाला खालेपारा, कुड़कानार, विकासखण्ड व जिला बस्तर।

बच्चे जब कुछ जानने, समझने लायक होते हैं तो उन्हें अपने व अपने परिवार के सदस्यों द्वारा उपयोग में लाये जाने वाले वस्तुओं की पहचान करना प्रारंभ कर देते हैं। अपने आस पास जो भी वस्तुएं होती है उसे देखना, समझना व जानना चाहते है। इसलिए उनके हाथ में जो वस्तुएं आती है। उसे उथल पुथल कर देखते है व उठा पटक कर खेलते है। बचपन से ही खेल के प्रति उनकी रुचि अधिक होती है। उन्हें खिलौने से बहुत लगाव होता है जो बड़े होते तक बना रहता है। घर हो या विद्यालय बच्चों को खेलने में अधिक रुचि होती है। शिक्षिका भी बच्चों के इस बाल मनोविज्ञान को समझती है। इसीलिये वह अपने अध्यायपन में स्वयं खिलौने बनाकर उपयोग करती है। शिक्षिका ने अनुभव किया कि बच्चे खिलौने से जल्दी सीखते हैं। बच्चों की रुचि को ध्यान में रख कर शिक्षिका ने इस वर्ष ग्रीष्मकालीन अवकाश में जन समुदाय के सहयोग से बच्चों को मिट्टी, कागज, प्लास्टिक, अनुपयोगी वस्तुओं से खिलौना बनाना सिखायेगीं। ताकि बच्चों में जीवनोपयोगी कौशल विकसित किया जा सके।

एजेंडा 04- ग्रामीण खेल सिखाना

श्रीमती अर्पणा मिश्र 9009226059 सहायक शिक्षिका शासकीय प्राथमिक विद्यालय डकईपारा, विकासखण्ड बैकुंठपुर, जिला कोरिया।

तन का मन से और मन का तन से गहरा संबंध होता है। तन व मन को स्वस्थ रखने के लिए शारीरिक गतिविधि एवं खेल की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। खेल से बच्चों में व्यक्तिगत, सामाजिक, शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं संवेगात्मक विकास होता है। विद्यालय में बच्चों को पढ़ाई के साथ साथ खेलने का अवसर मिले तो निश्चित ही वे भविष्य के लिए एक अच्छे खिलाड़ी हो सकते है। शिक्षिका ने अनुभव किया कि आजकल बच्चे घर पर मोबाइल में अधिक व्यस्त रहते हैं और पालक भी आसानी से उन्हें मोबाइल उपलब्ध करा देते है। अब पहले की तरह घर के बाहर धमाचौकड़ी करने या स्थानीय खेलों को खेलने वाले बच्चों की टोली नही दिखाई देती है। खेल व्यायाम, शारीरिक गतिविधि में कमी के कारण बच्चों का शारीरिक व मानसिक विकास अपेक्षाकृत कम हो रहा है।

इसी बात को ध्यान में रख कर शिक्षिका ने इस वर्ष ग्रीष्मकालीन अवकाश में बच्चों को उनके परिवेश के ग्रामीण खेल, व्यायाम, जिमनास्टिक, कबड्डी, खो-खो, फुगड़ी, बांटी, भौंरा, योगा रस्साकस्सी सिखाने का निर्णय लिया है। जिससे स्थानीय खेलों की जानकारी दे कर बच्चों में खेल के प्रति रुचि विकसित किया जा सके व भविष्य में एक अच्छे खिलाड़ी बनने की ओर अग्रसर होगे।

एजेंडा 09- सिलाई कढ़ाई सिखाना

श्रीमती चंद्रिका मिरी 8889414904 सहायक शिक्षक शासकीय प्राथमिक विद्यालय धनुहारपारा कुकदा, विकासखण्ड मस्तूरी, जिला बिलासपुर।

शिक्षा सिर्फ पढ़ लिख लेने का नाम नही है बल्कि किसी सीखी हुई जानकारी को दूसरे पीढ़ी तक पहुचाने, सीखाने व बताने का नाम है। शिक्षिका ने बचपन में अपने परिवार के बड़े सदस्यों से फटे पुराने कपड़े को सिलाई करते, काज बटन करते एवं पुरानी अनुपयोगी वस्तुओं से घर की साज सज्जा के लिए सामग्री देखा एवं बनाना सीखा है। शिक्षिका स्वयं विद्यालय में बच्चों के कपड़े से गिरे हुए बटन को लगाती है फटे कपड़े को सूई धागा की सहायता से सिलाई करती है। ये सब करते हुए उनके मन में ख्याल आया की कपड़े सिलाई करने के लिए एक सिलाई मशीन रख लिया जाए। अपने इस सकारात्मक विचार को स्टाफ के सदस्यों के साथ साझा किया सभी ने मिलकर विद्यालय के लिए सिलाई मशीन खरीदा है। अब बच्चों के फटे हुए कपड़े की सिलाई शिक्षिका स्वंय मशीन से करती है। प्रत्येक वर्ष इनकी शाला में ग्रीष्मकालीन अवकाश पर बच्चों को कुछ नया सिखाने का कार्य किया जाता है। इस वर्ष भी शिक्षिका ने बच्चों को हुनर सिखाने की तैयारी कर ली है। इस वर्ष ग्रीष्मकालीन अवकाश में अपने विद्यालय के बच्चों को कपड़े सिलाई सिखाएगी ताकि बच्चे स्वयं अपने फटे कपड़े सील सके। साथ ही कशीदाकारी, घर के पुराने सामग्री से साज सज्जा के वस्तुए बनाने के लिए सिखायेगीं। जिससे बच्चे में जीवनोपयोगी हुनर सीख सके।

एजेंडा 10- अभिनय कला सिखाना

श्री बलराम नेताम 7974433292 सहायक शिक्षक शासकीय बालक प्राथमिक शाला तुमगांव, जिला महासमुन्द।

शिक्षक स्वयं ग्रामीण परिवेश में पले बढ़े हैं। बचपन से ही उन्होंने अपने गांव में आयोजित होने वाली रामलीला, नाचा, गम्मत, नुक्कड़ नाटक के मंचन को देखे व सीखे हैं। समय के साथ अब गांव में आयोजित होने वाली मंचीय कार्यक्रम का स्थान टेलीविजन ने ले लिया है। इस कारण से मंचीय प्रस्तुति देने वाले कलाकारों की संख्या कम हो रही है। शिक्षक का मानना है कि आज कल बच्चे अपने स्तर पर बहुत कुछ सीखते हैं अपने आस पास या परिवेश में घट रही घटनाओं का ऑब्जर्व करते है। घर पर या पडोस के बड़े बुजुर्गों की नकल करते हैं।

टेलीविजन में दिखाये जाने वाले कार्टून, अपने प्रिय पात्र के गतिविधियों या डायलॉग का अभिनय करने का प्रयास करते हैं अभिनय कला के प्रति बच्चों के इस रुचि को देख कर शिक्षक ने ग्रीष्मकालीन अवकाश में अपने शाला में बच्चों को अभिनय कला सिखाने का निर्णय लिया है। इस हेतु वे बच्चों को पाठ्य पुस्तक व स्थानीय लोक कहानियों एवं महापुरुषों के जीवन गाथा को अभिनय के माध्यम से बच्चों को सिखाएंगे। जिससे बच्चे अभिनय कला के कौशल को सीख कर पारंगत हो सकें।

" आप भी इन शिक्षकों की तरह अपने स्तर पर बच्चों को नया कौशल सिखाकर भविष्य के लिए गढ़ने और उन्हें आगे बढ़ाने का काम कर सकते हैं। "

चर्चा के बिंदु :-

- आप अपने संकुल के शिक्षकों के साथ इस वर्ष के चर्चा पत्र में दिए बिन्दुओं पर अपना अनुभव साझा करें ।
- आपके जिले में चर्चा पत्र के माध्यम से बदलाव लाने वाले शिक्षकों के कार्यों पर चर्चा करे ।
- चर्चा पत्र में आपके अनुसार किन बिन्दुओं को शामिल किया जाना चाहिए ?
- ग्रीष्मकालीन अवकाश में बच्चों को कौन-कौन से कौशल सिखायी जानी चाहिए ?